2015 - 2016

पहल

एक कदम बदलाव की ओर...

सहयोग RBS | RDTT

गेहूँ की एस. डबल्यू. आई. पद्धति से उत्पादन बढ़ाने की सफल कहानी

dsc
Development
Support
Centre

परिचयः

मध्य प्रदेश के धार जिले में एक गांव है पडियाद। गांव की कुल आबादी २००० है जिसमें से ९० प्रतिशत लोग अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के है। यहां लोग मुख्यतः खेती व मज़दूरी पर निर्भर हैं ।

किसानों के हालात

यंहा के किसान खरीफ सीजन में कपास की फसल लेने के बाद रबी में गेहूँ की खेती करते हैं । किसानों का खेती करने का तरीका परंपरागत है। इसके कारण वे एक बीघा ज़मीन में ७०-८० किलो ग्राम तक बीज का उपयोग करते हैं । वे बीज का उपचार भी नहीं करते जिससे कि बीज मिट्टी में रहने वाले रोगाणुओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता नहीं विकसित कर पाता। अधिक बीज उपयोग करने के कारण किसानों के खेती का खर्च बढ़ता ही जाता है और परम्परागत पद्धति में बीज उपचार न करने के कारण बीज कम उगते हैं जिससे उत्पादन भी कम मिलता है अतः उनकी कुल आमदनी में कमी आ रही है।

बदलाव की पहल

डीएससी (डेवलपमेंट सपोर्ट सेंटर) के फिल्ड निरीक्षक और कृषि विशेषज्ञों ने जब इस इलाके का अवलोकन किया तो देखा के किसान अभी भी वही परंपरागत तरीको वाली खेती कर रहे हैं जिससे उनका गेहूँ का उत्पादन एक नियत मात्रा से बढ़ नहीं पा रहा है। ऊपर से मंहगाई के लगातार बढ़ते रहने से किसानों की आजीविका संबधी मुसीबतें भी बढ़ रही हैं ।

इन सभी समस्याओ का एक हल था कि किसी भी तरह से फसल का उत्पादन बढ़ाया जाए और खर्चो में कटौती की जाए। इन्ही सब चीजों को ध्यान में रखते हुए डीएससी के विशेषज्ञों ने किसानों को एस. डबल्यू. आई. यानि सिस्टम ऑफ व्हीट इंटेंसिफिकेशन नामक वैज्ञानिक पद्धति से गेंहू की खेती करने की सलाह दी। डीएससी से नयी तकनीक की खेती की जानकारी प्राप्त करके किसानों ने अपने खेतों में एस. डबल्यू. आई. पद्धति से गेहूं बोए जिससे उनका उत्पादन बढ़ा, खेती के खर्च में भी कमी आई और उत्पादन बढ़ने से आमदनी भी ज्यादा हुई।

बदलाव

पहले जहाँ किसान बसंत लक्ष्मण अपने परम्परागत पद्धति से १ बीघे से लगभग ७ क्विंटल की फसल से लगभग रूपये ६००० का शुद्ध लाभ ले पाते थे वहीं वैज्ञानिक पद्धति से गेहूं बोने से उसी जमीन से लगभग उसी खर्च में १२ क्विन्टल का उत्पादन मिला, सामान्य बाज़ार भाव के हिसाब से लगभग रूपये ११००० की आमदनी में बढ़ोत्तरी हुई।

यहाँ फायदा केवल उत्पादन में ही नहीं हुआ, बल्कि असमय की बरसात से उनके खेत में नुक्सान भी कम हुआ। एस. डबल्यू. आई. पद्धति में पौधे से पौधे व क्यारी से क्यारी की दूरी व फसल में पोषण प्रबंधन का विशेष ध्यान रखा जाता है। इस तरह वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने से पौधों की जड़ो को पर्याप्त पोषण मिलता है व जड़ें मजबूत होती हैं। असमय की बरसात व तेज हवा से नुकसान तो होता ही है लेकिन एस. डबल्यू. आई. पद्धति में मजबूत जड़ व पौधे से पौधे व क्यारी से क्यारी की सुरक्षित दूरी के कारण तेज हवा आसानी से निकल जाती है और पौधों को कम नुक्सान पहुचता है।

बसंत लक्ष्मण नाम के किसान जो कि पडियाद गांव की जय मां अम्बे किसान क्लब के सदस्य है, उनके एक बीघा खेत में प्रदर्शनी के तौर पर एस. डबल्यू. आई. के वैज्ञानिक पद्धति से गेहूं बोने का निर्णय लिया गया. गेहूं की खेती का खर्च

क्रमांक	विवरण	SWI पद्धति से खेती	सामान्य पद्धति से खेती
१	खेत तैयारी खर्च	५००	५००
२	बीज	४५०	८००
३	बीज बुआई खर्च	६००	५००
४	खाद	२३००	१८००
५	पानी	५००	७००
६	मज़दूरी	२००	४००
७	दवाई	३२०	२४०
८	फसल कटाई खर्च	९००	७००
९	फसल ट्रान्सपोर्ट खर्च	२००	२००
१०	अन्य	२००	३५०
११	**कुल**	**६१७०**	**६१९०**
	कुल उत्पादन	**१२ क्विन्टल**	**७ क्विन्टल**
	आय	**रू.१७४००**	**रू.१०१५०**
	शुद्ध आय	**रू.११२३०**	**रू.३९६०**

चुनौतियाः

- परियोजना क्षेत्र में अधिकतर किसान सीमांत किसान है जो नयी तकनीक अपनाने से डरते हैं।
- मज़दूरों की कमी
- पडोसी किसानों द्वारी नयी फसल लगाने वाले को हतोत्साहित किया जाना।
- प्रतिकूल मौसम।
- पिछले कुछ वर्षों से फसल के स्थिर बाज़ार भाव।
- बिचौलियों की अधिकता इत्यादि।

ध्यान रखने योग्य बातेः

- प्रतिएकड़ १.१० किलोग्राम का बीज दर
- गर्म पानी, गौमूत्र, वर्मीकम्पोस्ट एवं वाविस्टीन से बीजोपचार और अंकुरण
- कतार से कतार ८ इंच एवं बीज से बीज की दूरी ८ इंच
- एक स्थान पर २ बीज डालें
- रोपाई के २० और ३० दिन पर कम से कम २ बार कोड़ाई और खरपतवार का नियंत्रण

SWI पद्दति से गेहूँ की खेती कैसे करें

- कम बीज दरः सिर्फ १० किलो ग्राम प्रति एकड
- बीच उपचार एवं संशोधन
- पौधों के बीच अधिक दूरी (८ इंच कतार से कतार एवं ८ इंच पौधे से पोधा)
- २ से ३ बार वीडर से कोड़ाई
- फसल की देखभाल सामान्य गेहूं की फसल की तरह ही की गई
- फूल आने एवं दाना में दूध भरने के समय सिंचाई देने की व्यवस्था

बीज का चुनाव और उपचार

बीज का चुनावः इस विधि के लिए किसी खास बीज की जरूरत नहीं है। अपने इलाके के लिए जो उन्नत बीज अनुशांसित है उसीका प्रयोग करें। बीज नया होना चाहिए, उपयोग में लाया गया बीजः निर्मल अजय - ७२।

बीज का उपचारः

१० किलो गेहूँ के बीज को उपचार के लिए बुआई से पूर्व निम्नलिखित सामान की आवश्यकता होती हैः

१० किलो उन्नत किस्म के गेहूं का बीज, २० लीटर गुनगुना पानी, ५ किलो वर्मीकम्पोस्ट खाद, ४ किलो गुड़, ४ लीटर गौमूत्र, २० ग्राम वाबिस्टीन (कार्बेन्डाजिम) फफूंदीनाशक।

खेत की तैयारी सामान्य गेहूँ की खेत की तरह ही करते हैं। २० क्विन्टल गोबर खाद/कम्पोस्ट खाद या ४ क्विन्टल वर्मीकम्पोस्ट खाद प्रति एकड़ प्रयोग करना चाहिए। बुवाई के ५ से ७ दिन पहले एक बार पलेवा लेना चाहिए। अंतिम जुताई के पहले ३४ किलो डीएपी और १३.५ किलो पोटाश खाद का प्रति एकड़ खेत में छिड़ककर अच्छी तरह मिट्टी में मिलाना चाहिए।

बीज का उपचार

१० किलो बीज में से मिट्टी, कंकड़ एवं खराब बीजों को छांटना, फिर २० लीटर पानी एक बर्तन में गर्म करना (गुनगुना), छांटे हुए बीजों को गुनगुने पानी में डालना, पानी के उपर तैर रहे बीजों को छानकर हटा देना, इस पानी में ५ किलो वर्मीकम्पोस्ट खाद, ४ किलो गुड़ और ४ लीटर गौमूत्र मिलाकर ८ खंटे के लिए छोड़ देना, ८ घंटे के बाद मिश्रण को एक कपडे से छान लेना, बीज एवं मिश्रण का घोल अलग हो जाएंगे, घोल को फैंक देना, बीज एवं अन्य मिश्रण में २५ ग्राम वाबिस्टीन फफुंदीनाशक मिलाकर १२ घंटे के लिए अंकुरित होने के लिए गीले बोरे में बांधकर छोड़ देना, अंकुरित बीज को बुवाई के लिए इस्तेमाल करना। इस विधि को प्राइमिंग कहते हैं जिससे बीज की बढ़ने की शक्ति में बढ़ौतरी होती है।

उपसंहारः

सालों साल परंपरागत तरीको वाल खेती करने के बजाय सालों के अभ्यास के बाद तैयार की गई नई वैज्ञानिक पद्धति वाली खेती करने से फसल की गुणवत्ता भी अच्छी मिलती है एवं उत्पादन भी ज्यादा मिलता है। . वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने का सबसे ज्यादा फायदा यह होता है कि उसमे कम खर्च में ज्यादा उत्पादन मिलता है और ज्यादा उत्पादन यानि ज्यादा कमाई मतलब की अधिक खुशहाल जिंदगी। नये युग की नयी खेती, दाने जैसे हीरा मोती

प्रतिवेदक : श्री मोहित पाटीदार • **सहयोग** : श्री कमलेश रजत • **मार्गदर्शक** : श्री मोहन शर्मा

dsc
Development
Support
Centre

डीएससी का परिचय

डीएससी वर्ष १९९४ से प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन जैसे कि जल, जमीन और कृषि विकास से आजिविका वृद्धि हेतु ज्ञान आधारित सहयोग प्रदान करने का कार्य कर रही है ख इसके तहत राज्य व केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों तथा अन्य संस्थाओं के साथ जुड़कर नीति निर्धारण, क्षमतावर्धन, अनुसंधान, मूल्यांकन, नेटवर्किंग आदि माध्यम से कृषि में उपयुक्त एवं स्थायी विकास करने हेतु संस्था निरंतर प्रयत्नशील है। डीएससी संस्था गुजरात में मेहसाना, साबरकांठा, आणंद, अमरेली, राजकोट आदि जिलों में तथा मध्यप्रदेश के धार, अलीराजपुर, इन्दौर एवं देवास जिलों में ३00 से अधिक गांवों के लगभग एक लाख किसान परिवारों को वॉटरशेड, सहभागी सिंचाई प्रबंधन तथा कृषि व उद्यमिता विकास आदि कार्यक्रमो के ज़रिए सहयोग कर रही है। रतन दोराब जी टाटा ट्रस्ट, मुंबई; रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड फाउंडेशन, भारत; व आई डी एच के वित्तीय सहयोग से संस्था परियोजना क्षेत्र में कृषि को चिरस्थायी बनाने व कृषि से आजिविका में वृद्धि करने हेतु कृत संकल्पित है.

संपर्कः

यदि आपको इस प्रकार की खेती के लिए अधिक जानकारी अथवा मार्गदर्शन चाहिए तो कृपया नीचे दिए पते पर संपर्क करें

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, कुक्षी

मोबाईल नंबरः ०९४०७१२३९१३

कान्तिकुमार जैन के मकान में, होण्डा शो-रूम के सामने, अलिराजपुर रोड, कुक्षी, जिला धार, (म.प्र.)

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, मनावर

मोबाईल नंबरः ०९४०७१३९३४३, मांगलिक भवन के पास, मेला मैदान रोड, मनावर- ४५४४४६, जिला- धार

Concept & Design by : www.madhyam.org